अध्याय-6

परोपकार

'परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।'

बिना स्वार्थ के अन्य किसी व्यक्ति की शारीरिक, आर्थिक या बौद्धिक सहायता करना ही परोपकार है। मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने की सार्थकता ही इस बात में है कि वह स्वार्थ से ऊपर उठे, केवल अपनी ही भलाई की बात न सोचे। सहृदय बने और दूसरों की भलाई के लिए सदैव तत्पर रहे।

समाज में हर प्रकार के लोग रहते हैं। दुर्घटनाएँ, बीमारियाँ और विपत्तियाँ अचानक ही आती हैं। ऐसे में पीड़ित और जरूरतमंद व्यक्ति की सहायता के लिए यदि कोई स्वयं प्रेरित होकर आगे आता है और उसकी मदद करता है तो इसे उस व्यक्ति की दयालुता और परोपकार कहा जाएगा। निस्वार्थ भाव से की गई दूसरों की सहायता से हमें आत्मिक सुख और आनन्द की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्तियों को सज्जन कहा जाता है। परोपकार को संसार का सबसे बड़ा धर्म और दूसरों को कष्ट पहुँचाने को सबसे निकृष्ट कर्म माना गया है। परोपकार धर्म का पालन करते हुए हम सभी जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों के प्रति सहृदय बनें, जीवन की सार्थकता इसी में है। हमें प्रकृति और पशु-पक्षियों से सीख मिलती है-

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्।।

अर्थात् वृक्ष परोपकार के लिए फलते हैं, नदियाँ परोपकार के लिए बहती हैं, गायें परोपकार के लिए ही दूध देती है, वस्तुतः हमारा यह शरीर भी दूसरों की भलाई के लिए ही होता है।

प्रेरक प्रसंग

- एक बार एक बालक किसी गाँव में एक पुलिया के पास गायें चरा रहा था। उसने देखा कि रेल्वे लाइन की पुलिया में आग लग गई है। बालक छोटा था, पर था बहुत समझदार। उसने मन में विचार किया कि पुलिया जल रही है, जब रेलगाड़ी इस पर से निकलेगी तो पलट जाएगी और सैकड़ों यात्री मौत के मुँह में चले जाएँगे। मुझे इनकी रक्षा करना चाहिए।

  उसने स्कूल और पुस्तकों में आचार्य जी से परोपकार की महिमा पढ़ी और सुनी थी। अतः विचार कर उसने कुछ करने का निश्चय किया। वहाँ उसके पास लाल कपड़े जैसा कुछ भी नहीं था, जिससे कि रेलगाड़ी को रोका जा सके। उसने बहुत विचार किया, पर समझ में कुछ न आया। यकायक एक योजना उसने बना डाली। वह रेल लाइन पर खड़ा हो गया। उसे दूर से छुक-छुक करती सीटी देती रेलगाड़ी आती दिखाई दी। वह गाड़ी की ओर पटरी पर ही दौड़ने लगा और वह जोर-जोर से चिल्लाता आगे बढ़ रहा था, 'ठहरो-ठहरो-पुलिया में आग लगी हुई है। गाड़ी रोको।' पर वहाँ उसकी आवाज किसी को भी न सुनाई पड़ी। शोर में उसकी आवाज खो गई। वह पटरी के बीच में खड़ा अपने दोनों हाथ उठाकर पुकार रहा था, 'गाड़ी रोको-गाड़ी रोको।' गाड़ी धड़धड़ाती उसे कुचलती हुई निकल गई। बालक की चीख भी गाड़ी की आवाज में विलीन हो गई। लेकिन चालक की नजर उस पर पड़ गई। उसने थोड़ी दूर जाकर गाड़ी रोक दी। लोगों ने देखा पुलिया धू-धू कर जल रही है और बालक कटा पड़ा है। दूर पर कुछ गायें-भैंसे चर रही हैं। लोगों को समझते देर न

लगी कि बालक ने अपना बलिदान देकर हम सब की जान बचाई है।
बालक के साहस, बुद्धि और त्याग की सभी ने मुक्त कण्ठ से सराहना की। रेलवे बोर्ड ने उसके माता-पिता का सम्मान किया। हमें भी हर स्थिति में दूसरों की सहायता अवश्य करनी चाहिए।

- लगभग नौ-सौ वर्ष पहले की बात है, राजा भीमदेव गुजरात में राज करते थे। उनका एक लड़का था, मूलराज। लड़का होनहार था, साथ ही बड़ा दयालु भी था। एक साल गुजरात में बरसात नहीं हुई। खेत सूख गए। एक गाँव के लोग राजा को लगान नहीं दे सके। राजा के सिपाहियों ने गाँव में जाकर उन लोगों के घर में जो कुछ था, सब जप्त कर लिया और किसानों को भी साथ लाकर हाजिर किया। राजकुमार मूलराज पास ही खेल रहा था। किसान बेचारे दु:खी थे और आपस में अपनी बुरी हालत की चर्चा कर रहे थे। राजकुमार ने उनकी सारी बातें सुनीं। उनका दु:ख जानकर मूलराज की आँखों से आँसू बहने लगे। मूलराज ने उनका दु:ख दूर करने का निश्चय किया।
  उन दिनों राजकुमार घुड़सवारी की कला सीख रहा था। राजा ने कहा था, 'तुम अच्छी तरह सीख लोगे, तब तुम्हें इनाम दिया जाएगा।' मूलराज ने अभ्यास करके घुड़सवारी की कला सीख ली। पिता को अपनी कला दिखलाई। राजा ने प्रसन्न होकर कहा-'बेटा! मैं बहुत प्रसन्न हूँ, बोलो, क्या इनाम चाहते हो?' मूलराज ने कहा-'पिताजी! इन बेचारे गरीबों की जप्त की हुई चीजें वापस लौटा दीजिए और इन्हें घर जाने की आज्ञा दीजिए।'
  मूलराज की बात सुनकर राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई। उनकी आँखों में हर्ष के आँसू छलक आए। फिर उन्होंने कहा-'बेटा! तूने अपने लिए तो कुछ नहीं माँगा, कुछ तो माँग।' इस पर मूलराज बोला-'पिताजी! आप प्रसन्न हैं तो मुझे यह दीजिए कि अब अगर किसी साल फसल न हो तो उस साल लगान वसूल ही न किया जाए, ऐसा नियम बना दें। इससे मेरी आत्मा को बड़ा सुख होगा।'
  राजा ने ऐसा ही किया, किसानों की जप्त की हुई चीजें लौटा दीं और भविष्य के लिए फसल न होने के दिनों में लगान न लेने का नियम बना दिया। किसान खुशी-खुशी आशीष देते हुए अपने घरों को लौट गए।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

1. परोपकार और दयालुता का अर्थ प्रसंगों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
2. गायें चराने वाले बालक ने क्या देखा ओर क्या निर्णय लिया?
3. बालक ने रेल में बैठे हजारों लोगों की जान कैसे बचाई?
4. मूलराज को राजा ने कौन-कौन से दो इनाम दिए?

प्रायोजना कार्य

1. परोपकार से संबंधित दोहे संकलित कीजिए।
2. आपने कभी कोई परोपकार का कार्य किया हो, तो उसे कक्षा में सुनाइए।
3. परोपकार से संबंधित कोई कविता/ कहानी कक्षा में सुनाइए और साथियों से भी सुनिए।